प्राकृत कथा साहित्य

इकाई - (2)

प्राकृत कथा का स्वरूप तत्व एवं प्रकार

Q1 प्राकृत कथा साहित्य का स्वरूप तत्व एवं प्रकार का विवेचन करें?

Ans- प्राकृत कथाओं का आविर्भाव आगम साहित्य से हुआ है। तिलोयपण्णत्ति में तीर्थंकरों के माता पिताओं के नाम जन्म स्थान, आयु तपस्थान आदि का निरूपण है। चरित ग्रंथों के लिए इस प्रकार के सूत्र रूप उल्लेख ही आधार बनते हैं। ज्ञाता धर्म कथा, उवासगदसा, आचारांग प्रभृति ग्रन्थों में रूपक और उपमानों के साथ घटनात्मक कथाएँ भी आई हैं।

प्राकृत कथा साहित्य का तत्व निम्नलिखित हैं जो दो प्रकार के हैं।

(1) वस्तु → कथावस्तु (थीम) मुख्य कथानक (प्लॉट) और अवान्तर कथाएँ (एपीसोड)।

(2) पात्र — वे व्यक्ति जिनके द्वारा घटनाएँ घटित होती है अथवा जो उन घटनाओं से प्रभावित होते हैं। इन व्यक्तियों के क्रिया-कलापों से कथानक और कथावस्तु का निर्माण होता है। पात्रों का प्रयोग चरित्र-चित्रण के लिए किया जाता है।

(3) संवाद या कथोपकथन → संवाद पात्रों को सजीव तो बनाते ही हैं, साथ ही कथावस्तु के विकास और पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी यथोचित सहयोग प्रदान करते हैं।

(4) देश काल → पात्रों के समान देशकाल का भी अपना व्यक्तित्व होता है। स्थानीय रंग या प्रादेशिक विवरण

के साथ युगविशेष की सम्पृक्तता है

(5) शैली → कथा साहित्य में समग्र जीवन का एक संश्लिष्ट चित्र उपस्थित किया जाता है, अतः शैली द्वारा लेखक विभिन्न तत्वों का नियोजन करता है

(6) उद्देश्य → कथा का कोई न कोई परिणाम होता है। कथानक की परिस्थितियों या चारित्रिक विशेषताओं में किसी न किसी विशिष्ट जीवन दृष्टि की का समावेश रहता है। कथासूत्र के साथ लेखक की जीवन-दृष्टि का भी समावेश रहता है। कथासूत्र के साथ लेखक जीवन-दृष्टि को मूर्तरूप देने लगता है अतः जीवन दर्शन के किसी विशेष पहलू पर प्रकाश डालना कथा का उद्देश्य है।

प्राकृत कथा साहित्य का प्रकार निम्नलिखित है जो इस प्रकार है।

(1) अंकथा (1) अर्थकथा (2) कामकथा, (3) धर्मकथा (4) मिश्रित कथा

(1) अर्थकथा → दशवैकालिक में विद्या शिल्प, उपाय-प्रयास अर्थार्जन के लिए किया गया प्रयास, निर्वेद-संचय, साम, दण्ड और भेद का जिसमें वर्णन हो या ये विषय जिसमें अनुमित या व्यंग्य हो, वह अर्थकथा है। अर्थ प्रधान होने से अथवा आजीविका के साधनों-असि, मषि कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य अथवा धातुवाद आदि अर्थ प्राप्ति के विविध साधनों का जिसमें निरूपण हो, वह अर्थकथा है। तात्पर्य यह है कि जिसकी कथावस्तु का सम्बन्ध अर्थ से हो, वह अर्थकथा कहलाती है। प्राकृत कथाओं में संचय के प्रति विग्रहण तथा परिग्रह परिमाण के प्रति आसक्ति प्रासंगिक विवेचना किया है। कथाएं पुराण जैसी ही प्रतीत होती हैं, पर कथा के जो तत्व और प्रयोजन

है, इनका समावेश प्रचुर परिमाण में पाया जाता है

(2) कामकथा → सौन्दर्य, अवस्था - युवावस्था, वेश दाक्षिण्य आदि विषयों की तथा कला की शिक्षा का दृष्ट श्रुत, अनुभूत और संस्तव-परिचय प्रकट करना कामकथा है। स्त्री-पुरुष-यौन सम्बन्ध को लेकर कथाओं के लिखे जाने की परम्परा प्राकृत में पुरानी है। कामकथाओं में प्रेम कथाओं का भी अन्तर्भाव रहता है। प्रेमी और प्रेमिका के उत्कृष्ट प्रेम उनके मिलन मार्ग की बाधाएँ, मिलने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न तथा अन्त में उनके मिलन के वर्णन बड़े रोचक ढंग से रहता है। रोमान्स का प्रयोग भी कामकथाओं में पाया जाता है

(3) धर्मकथा → धर्म कथा में क्षमा, मार्दव आर्जव तप, संयम, सत्य शौच और किसी साधना या अनुष्ठान विशेष का प्रतिपादन किया जाता है। इस धर्म कथा के द्रव्य, क्षेत्र, तीर्थ, काल भाव महाफल और प्राकृत के सात अंग है। उद्योतन सूरि ने नाना जीवों के ~~नाना~~ नाना जीवों के नाना प्रकार के भाव-विभाव का निरूपण करनेवाली कथा धर्मकथा बतलायी है। इसमें जीवों के कर्मविपाक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक भावों की उत्पत्ति के साधक, साधन तथा जीवन को सभी प्रकार से सुखी बनानेवाले नियम आदि का अभिव्यंजन होता है। धर्मकथाओं में शील, संयम, तप पुण्य और पाप के रहस्य के सूक्ष्म विवेचन के साथ मानव जीवन और प्रकृति की सम्पूर्ण विभूति के उज्जवल चित्र बड़े सुन्दर पाये जाते है।

(4) मिश्रित-कथा → मिश्र या संकीर्ण कथा की प्रशंसा सभी प्राकृत-कथाकारों ने की है।

Scanned with CamScanner

अर्थकथा, कामकथा और धर्मकथा इन तीनों का
~~मिश्रण सा. परिस्थिति आदि प्रमुख तत्व वर्तमान~~
इस विधा में पाया जाता है। इसमें कथासूत्र, थीम,
कथानक, पात्र और देशकाल या परिस्थिति आदि प्रमुख
तत्व वर्तमान रहते हैं। मनोरंजन और कुतूहल के
साथ जन्म-जन्मान्तरों से कथानकों की जटिलता
सुन्दर ढंग से वर्तमान रहती है संकीर्ण कथाओं के
प्रधान विषय राजाओं या वीरों के शौर्य प्रेम, ज्ञान
दान, शील और वैराग्य, समुद्री यात्राओं के
साहस: अगम्य स्थानों के अस्तित्वों एवं स्वर्ग
नरकादि आदि के कष्टों का विवेचन है।